National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2021 1(38): 205-209
© 2021 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.अनिता पी.एल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
महाराजा कॉलेज,
एरणाकुलम

Correspondence:
डॉ.अनिता पी.एल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
महाराजा कॉलेज,
एरणाकुलम

धार्मिक चेतना और सामाजिक यथार्थ : हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में आस्था बनाम अंधविश्वास

(Dharmik Chetna Aur Samajik Yatharth : Hindi Aanchalik Upanyason Mein Aastha Banam Andhvishwas)

डॉ. अनिता पी.एल

सारांश :

इस लेख में हिन्दी आंचलिक उपन्यासों के माध्यम से धार्मिक चेतना और अंधविश्वास के बीच के तनाव को प्रदर्शित किया गया है। लेख में आस्था और अंधविश्वास के मध्य सीमाओं और उनके सामाजिक-धार्मिक प्रभावों पर चर्चा की गई है। यह विषय विशेष रूप से उन उपन्यासों पर केंद्रित है, जो ग्रामीण समाज की जटिलताओं, पारंपरिक विश्वासों, और आधुनिकता के बीच संघर्ष को दर्शाते हैं। लेख में यह भी बताया गया है कि कैसे ये उपन्यास धार्मिक परंपराओं और अंधविश्वास के प्रभावों को समाज की वास्तविकताओं से जोड़ते हैं, और इसके माध्यम से पाठकों को सामाजिक सुधार की आवश्यकता और धार्मिक दृष्टिकोण की पुनः समीक्षा का संकेत मिलता है। साथ ही, यह लेख धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना के बीच संतुलन की खोज में समाज के बुरे प्रभावों से मुक्ति की बात करता है।

मूल शब्द :

धार्मिक चेतना - सामाजिक यथार्थ - आस्था - अंधविश्वास - आंचलिक उपन्यास - हिन्दी साहित्य - नैतिकता - सांस्कृतिक पहचान - विरासत - मानवीय मूल्य - समाज - धार्मिक परंपराएँ - अंधविश्वासी विचारधारा - सकारात्मक दृष्टिकोण - साहित्यिक दृष्टिकोण

भूमिका :

हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में धार्मिक चेतना और अंधविश्वास के बीच का संघर्ष समाज की गहरी जड़ों तक पहुंचता है। भारतीय समाज में धर्म का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहां परंपराएं, विश्वास और रीति-रिवाज पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते हैं। लेकिन इसी समाज में अंधविश्वास भी अपनी जड़ें जमाए हुए हैं, जो विज्ञान और तर्क के सिद्धांतों के खिलाफ होते हैं। हिन्दी आंचलिक उपन्यास, जो आमतौर पर ग्रामीण जीवन, उनके संघर्ष और समस्याओं को चित्रित करते हैं, धार्मिक चेतना और अंधविश्वास के बीच के इस विवाद को उजागर करते हैं। इस लेख का उद्देश्य इन उपन्यासों के माध्यम से यह समझना है कि कैसे धार्मिक विश्वासों और अंधविश्वास के प्रति दृष्टिकोण समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होते हैं। साथ ही, यह लेख यह भी विश्लेषण करता है कि किस तरह से उपन्यासकारों ने अपने पात्रों और कथानक के माध्यम से इस संघर्ष को उजागर किया और समाज के समक्ष सुधार की आवश्यकता को प्रस्तुत किया।

विविध धर्मों की मान्यता के अनुसार सांस्कृतिक मान्यता युक्त विविध पवित्र विश्वास ही धर्म की श्रेणी में आते हैं जो कि मानव समाज को अपनी प्राचीन पीढ़ियों से विरासत के रूप में जो प्राप्त होते हैं। उन्हीं के आधार पर वे जीवन क्रम का निर्धारण करते हैं और भविष्य की विपत्तियों से बचने का रास्ता

खोजते हैं। धर्म एक विश्वास भी है और शक्ति भी। नरेन्द्र मोहन के आनुसार "धर्म का संबन्ध कर्म से है। धर्म केवल दार्शनिक परिकल्पना नहीं है, वह एक ऋत सत्य है"[1] भारतीय ग्रामीण समाज को संचालित करने वाले तत्वों के अन्तर्गत धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय ग्रामीण अंचलों में अनेक प्राचीन आस्थाएँ अब भी अपने प्राचीन रूपों में विद्यमान है। हिन्दी के समकालीन आंचलिक उपन्यासों में धर्म व संस्कृति के आधार पर वास्तविक आस्था व अंधविश्वास पूर्ण जीवन प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । अशिक्षित होने के कारण ग्राम्य जन धार्मिक दृष्टि से बड़ा जागरूक होता है अन्धविश्वास सर्वत्र होते हैं, किन्तु ग्रामीण जीवन में उनका पुट कुछ अधिक ही रहता है। ग्रामों में भूत-प्रेत, जादू-टोना टोटका आदि के बारे में तरह तरह की बातें प्रचलित है। ईश्वर के नाम पर धार्मिक अन्धविश्वास पैदा करके अशिक्षित गांव के लोगों को चूसकर उससे कमाई करते हैं कुछ लोग । "भारतीय ग्राम चेतना अपनी प्रकृति और परिवेश में अन्याय अज्ञान जनित भूत प्रेत संबन्धी प्रकल्पनाओं को समाहित किए हुए है।"[2] अन्धविश्वासों के नीचे पलने वाले भारतीय गांवों में जहां ज्ञान की किरण अब भी कोसों दूर है। पाप, पुण्य, शकुन, अपशकुन जैसे अन्धविश्वासों को धर्म की आड़ में पलते देखा जा सकता है। आंचलिक उपन्यासकारों ने भारतीय जनमानस में व्याप्त अन्याय अज्ञान-जनित भूत-प्रेत संबन्धी प्रकल्पनाओं और अन्धविश्वासों, परंपराओं एवं रूढ़ियों का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया है ।

भारत एक विशाल देश है। यहाँ अनेक जातियाँ धर्मा, संस्कृतियों और भाषाओं का संगम है। पंजाब में मुख्य रूप से हिन्दू, सिक्ख और मुसल्मि तीनों धर्मों के लोग रहते हैं। कृष्णासोबती के उपन्यास ज़िन्दगीनामा' में विभाजन पूर्व पंजाब की धड़कती ज़िन्दगी का लुभावना चित्र अंकित किया गया है । हिन्दू और सिक्खों में अनेक समान उपजातियाँ । उपन्यास में शाह परिवार हिन्दू है। चाची महरी सिक्ख परिवार की है, जिसका प्रेम गणपत शाह से हो गया था। गांव में हिन्दू और मुसलमान सदियों से दो भाईयों के समान रहते हैं। लेखिका ने साम्प्रदायिकता को विष कहकर और समाज में फैल रहे उसके प्रभाव की ओर इशारा किया है। सही साम्प्रदायिकता गहन होकर सम्पूर्ण पंजाब को ध्वस्त कर देती है। चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम दोनों प्रकार की साम्प्रदायिकता का नेतृत्व प्रायः आभिजात वर्ग के हाथ में है, जो स्वयं नहीं लड़ता अपने वर्ग हितों के लिए जन साधारण को लड़ाता रहता है । यहाँ के ग्रामीण लोग आपस में भेदभाव नहीं रखते हैं। उनकी संस्कृति की विशेषता है कि हिन्दू और मुसलमान में आपसी मतभेद नहीं है । मसीत गुरुद्वार, गुरूनानक, बाबाफरीद, बारिश शाह, बुल्लेशाह, मियांमीर और कज्जू भगत की बोली गांव के सभी लोग रटते रहते हैं। बसाखी, लोहड़ी, शबेरात, ईद सभी मिलजुलकर मनाते हैं। शाह भी कटाई के समय सभी किसानों को खुशी-खुशी भोजन करवाता है, जिसमें हिन्दू मुस्लिम का कोई अन्तर नहीं रहता। शाह इतिहास का स्मरण करके हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रमाण देता है। गांव में आर्य समाजी लोग आकर गांव के हिन्दुओं को अधिक कट्टर बनाने का काम करते हैं। शहरों के प्रभाव के कारण गांव में भी धर्म को लेकर मारकाट आरंभ होगया है। "तुम्हारा नाम क्या गदर तुम्हारा काम क्या गदर । तुम्हारा पेशा गदर। तुम्हारा ईमान क्या गदर ।"[3] देश का राजनीतिक घटनाचक्र साम्प्रदायिक ताकतों को भटकाता है। राजनीतिक घटनाचक्र से प्रभावित ग्रामीण जन जीवन का अत्यन्त सफल व सूक्ष्म चित्रण लेखिका ने किया है 'जिन्दगीनामा' के पात्रों में ईश्वर के प्रति असीम आस्था है। इस उपन्यास का आरंभ ईश्वर की सृष्टि के अनुपम वर्णन से होता है।

'ज़िन्दगीनामा' के पात्र धर्म के भाव में अकण्ठ डूबे हैं। वे अग्निदेवता, सूर्यदेवता, अन्नदेवता और साधु सन्त महात्माओं की पूजा करते दिखाई देते हैं। त्योहारों के पीछे उनकी धार्मिक भावना कार्य करती है। धर्म की आस्था लोगों को पुण्य कार्य की ओर प्रेरित करती हैं, साथ ही पाप का भय अपराध से दूर रखता है। गांव के हिन्दू मुसल्मानों के धार्मिक विचारों में तो अंतर होता है। लेकिन सामाजिक, सांस्कृतिक आचार विचार में अन्तर दिखाई नहीं देता।ग्रामीण लोगों के जीवन में विश्वासों के साथ अन्धविश्वास भी जुड़ारहता है। 'ज़िन्दगीनामा' में सुक्खानी के पुत्र ने नींद से खांस खांसकर दूध फेंक दिया तब भूत प्रेत का वास कहकर लड़के के चादर के नीचे नींबू और धरेक के पत्ते और लोहा रखते हैं। जमीला का विश्वास है कि आवानों के लड़के का रूह गांव में भड़कती है, मामू मुसल्ली ने जिसका कत्ल किया था। इसके अलावा ग्रामीण लोगों के बीच अनेक रीति-रिवाज़े है जिनका सम्बन्ध अन्धविश्वास से है । नज़र उतारने के लिए हथेली में थूकना, कनाली से आटा बाहर गिरने से मेहमान की प्रतीक्षा करना आदि ग्रामीण जन जीवन से प्रचलित अन्धविश्वासों के अनेक उदाहरण हैं।

'इदन्नमम' में चित्रित श्यामली गांव में सिर्फ एक बनिया का घर मोदिलला का और एक मुसलमान का घर चीफ साब का है। दादा, मोदिलला और चीफ साब को गांववाले 'डंडा, झाला, छाता' कहकर पुकारते हैं। कही भी जाना हो, किसी समस्या का हल ढूँढना हो, तीनों एक साथ मिलकर करते हैं। साम्प्रदायिक सद्भाव के उत्तम उदाहरण के रूप में तीनों रहते हैं । अयोध्या ध्वंस की खबर तक गांव के सब लोगों के बीच मित्रता की भावना थी। जब रेडियों से रथयात्रा और अयोध्या की खबर पाते ही श्यामली गांव में भी लोग तहलका मचाने लगे। "मस्जिद दहाई से मुसलमानों ने हिन्दुओं को मारा है, काटा है। चलो हम भी मारेंगे मुसल्मान, काटेंगे उनके सिर, हाथ पाँव"[4] सांप्रदायिकता को लेकर जिसप्रकार की समस्या हमारे देश में है उतनी अन्य देशों में नहीं होगी। आज की राजनीति ने इसे पनपाने केलिए नये नये षड्यन्त्र रचे जा रहे है। साम्प्रदायिकता के मूल में जो घृणा भाव काम करता है, वह जातियों, धर्मों को लेकर सदियों से हमारे देश में है। अंग्रेज़ों ने इस देश के लोगों के मतभेदों का लाभ उठाकर शासन किया और यहां के लोगों के मन में धर्म के स्थान पर सांप्रदायिकता का विष बो दिया।

बचपन से गांव के लोगों के साथ पले बढ़े हुए चीफ साब अयोध्या की खबर पाते ही गांववालों के लिए सबसे बड़ा शत्रु बन गया। अयोध्या से कोसों दूर रहने वाले लोगों के मन में इस घटना का असर इतना पड़ा कि वे मस्जिद में जाकर गृ-मूतों से भर दिया और चीफ साब के घर आने वाली नौकरानी को धमका दिया कि हिन्दू हो के मुसलमान के घर जाना नहीं । अन्त में चीफ साब को गांव छोटना पड़ा। अपने जन्म स्थान छोड़कर जानेवालों का दर्द का टिकाना नहीं होता। उसके जाने के बाद भी कुसुमा मस्जिदवाली जगह साफ करके दीप जलाते थे। दादा खुरान को संभालके रखा है इसलिए गांव के लड़के मज़ाक उठाते हैं कि दादा मुल्ला होगये। बन्नेसाब भी नहीं रहे गांव में दंगे फसाद में किसी नासिया ने उनका कत्ल कर दिया। बन्नेसाब की लड़कियों को भी गांव के लड़कों ने नहीं छोड़ा। धर्म या धार्मिक व्यवस्था को मानना साम्प्रदायिकता नहीं बल्कि धर्म का शोषण ही साम्प्रदायिकता है। साधारण जनता धार्मिक होती है न कि साम्प्रदायिक उसकी धार्मिकता को धर्मनिरपेक्ष नेता साम्प्रदायिक रूप देते हैं

संद नगर में मन्दिर ही मन्दिर है, बीच बीच में मस्जिद भी। कहाँ से भजनों की धुन आ रही है, कहाँ से तीसरे पहर की नमाज़ की आवाज़ आ रही है इसका पता लगाना कठिन होता है। यहां कभी भी हिन्दू मुसल्मान दंगे भी नहीं हुए हैं। गांव की सारे स्त्रियाँ व्रत रखती हैं, त्योहार मनाती है, कोयलेवाले महाराज को सुनने के लिए सब इकट्टे होते हैं। मन्दा गांववालों को रामायण सुनाती हैं। बाद में मन्दा को लगा कि रामायण सुनाकर समय नष्ट करना व्यर्थ है। सिर्फ मन बहलाने के लिए नहीं है रामायण तुलसीदास की चौपाइयाँ विपत्तिकाल की कथा है। जब धरम की हानी हो रही थी तब असुरों को ध्वंस करने केलिए राम मनुष्य रूप में अवतिरत हुआ था। इसलिए मन्दा ने रामायण के इस संदेश को लेकर वह गांववालों के पीर हरने की कोशिश करने लगी । इस उपन्यास के बऊ भी भूत, प्रेत, जिन्नों के अन्धविश्वासों से मुक्त नहीं हैं। बक मन्दा को चढ़ती जवानी को देखकर उससे खसबोइया का तेल लगाने को कहता है। क्यों कि चढ़ती उमर को ही भूत पसन्द करता है। फिर सारी उम्र शरीर से नहीं छूटती।

हिन्दी के अधिकांश उपन्यासकारों ने देश विभाजन के बाद के परिप्रेक्ष्य को ही अपने उपन्यासों का आधार बनाया है। मैत्रेयी पुष्पा ने एक पात्र के ज़रिए 'चाक' में स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले की बात का थोड़ा सा जिक्र किया है। पाकिस्तान के अलग होने पर नम्बरदार बड़े धर्मपिता बनकर अपने गांव को पूरे हिन्दू लोगों के गांव घोषित करके, सारे मुसल्मानों का नाम बदलकर हिन्दू बनाया। सालों के बाद थानसिंह मुसलमानों को भटकाने के लिए धर्म को औज़ार बनाया। मुसलमानों के मन में यह जहर भर दिया गया कि गांव में दो मन्दिर है लेकिन एक मस्जिद भी नहीं और उनसे अपने हक के लिए लड़ने को कहा गया। वैर्य और शत्रुता नंबरदार और थानसिंह के बीच है लेकिन इसका शिकार होते हैं गांव के साधारण जनता और इनके औज़ार है धर्म "आजकल बहादुरी एक कोने में पड़ी भिनकती है। धर्म कर्म की सबसे बड़ी चतुराई है।"[5] राजनीतिक नेतागण हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करते रहे हैं । गांव के लोग भूत प्रेतों पर बहुत विश्वास करते हैं और उनसे बहुत डरते हैं। उनमें ऐसा विश्वास हैं कि आत्महत्या, कत्ल, दुर्घटना से प्राप्त मृत्यू तथा जीवन भर उत्पीड़ित व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात व्यक्ति भूत प्रेत बन जाता है । भूत, प्रेत या चुड़ैल का बास गांव वालों के अनुसार पेड़, मरघट, तालाब, या नदि का किनारा माना गया है। लोग विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगों और पागलपन को गांव में भूत प्रेत या चुड़ैल का प्रकोप मानते हैं। व्यक्ति के ऊपर से भूत प्रेतों और चुड़ैलों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए ओझा या तांत्रिक, झाड़-फूंक और मंत्र आदि का प्रयोग करते हैं। इन रोगियों को झाड़-फूंक की क्रूर यातनाओं से गुज़रना पड़ता है। लोगों का विश्वास है कि जिरौलीवाली मनोहर की बहु के शरीर पर भूत चढ़ने के कारण ही वह रोज़ घर के छत के ऊपर नंगा नाचती है। चुड़ैल को उतरवाने के लिए मनोहर की बहु को बहुत पोटा जाता है। लेकिन इसके विरोध में गांव वाले एक शब्द भी नहीं बोलते बल्कि बड़े भक्ति भाव से प्रार्थना करते हैं। मनोहर बहु के इस मानसिक विभ्रम का कारण चुड़ैल चढ़ने से नहीं बल्कि उसके छः माह का गर्भ कटवा-कटवाकर निकाल देने के कारण हुआ था मुशक्लि से उसे बहुत साल के बाद गर्भ हुआ था लेकिन शक की वजह से उसके पति ने उसका गर्भपात किया था। मनोहर बहु कि नंगा नाच देखकर गांव के सब लोग हंसी मज़ाक करते हैं सिवाय स्त्रियों को छोड़कर ।

देवी देवताओं में विश्वास, भाग्य, पुनर्जन्म में आस्था, भूत-प्रेत की कल्पना, तंत्र-मंत्र, जादूटोना आदि में विश्वास, साधू महात्मा जैसे तत्व ही ग्रामीण के धार्मिक जीवन के अन्तर्गत आते हैं। 'सोनामाटी' में धार्मिक जीवन के इन सारे पहलुओं का चित्रण मिलता है। गांववालों के मन को परलोक प्राप्ति या स्वर्ग प्राप्ति या मोक्ष प्राप्ति की चिन्ता अधिक व्यथित करती है । अपने पापों को नष्ट करने केलिए गांव वाले गंगा जैसी पवित्र नदियों में स्नान करते हैं, तीर्थ यात्राओं पर जाते हैं। घर में हवन, यज्ञ, अखण्ड रामायण कीर्तन आदि करते हैं। धर्म ने करइल के सांस्कृतिक जीवन को बाँध के रखा है। कथा सागर में मनोरम द्वीप जैसे सावन में नागपंचमी, रज्जेबाबा की पूजा, सतिमी पूजा, नाथा बाबा के यहाँ होम, बन्नी दाई, शीतल माता की सिरजना, पनठरकउआ, माता नाई की छाक सोहारी और जय का चढावा, काली स्थान का कराह-बकरा, झंड़ी रपटोला, पचरा, ओझा-सोखा का खोलना, भाखना, भादी के तीज, उसके निर्जल व्रत की प्रासंगिकता आदि चित्रण 'सोनामाटी' उपन्यास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बन गया है।

नयी पोढ़ी धार्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्यों की ओर अधिक प्रवृत्त हो रही है। पुरानी पीढ़ी अवश्य ही आध्यात्मवाद की ओर झुकी हुई है, लेकिन नई पीढ़ी पूजा पाठ को महत्व नहीं देती है। गांव में धर्म केवल आडम्बर और पाखण्ड बनकर रह गया है। धर्म के पीछे केवल गांववालों के पाप के डर से उत्पन्न डर की भावना है। सोनामाटी' में रामरूप एक शिक्षित युवा होने पर भी अन्धविश्वास से मुक्त नहीं है। अपने ज्वार के बाल की चोरी का नाम निकलवाने के

लिए वे छातापुर के सांखा के यहाँ जाता है। गांव के सारे लोग अपने ऊपर आने वाली विपत्ति को कर्मफल समझकर सिद्धों के पास जाते हैं और पूजा करते हैं। रामरूप अपने पुत्र को जॉडिस होने पर चिकित्सा के लिए ओझा को बुलाता है। इसप्रकार कुछ अंधविश्वास करइल अंचल के लोगों के बीच में व्याप्त है ।

विवेकीराय का 'समरशेष है' में पण्डित से रामराज धर्म के संबन्ध में कहते हैं कि 'हिन्दू धर्म सड़ गया है। धर्म, नीति, परंपरा, सभ्यता और मीठी मोठी बातें सब धोखा है, इन सब चीजें हमें दबाकर कायर बना दिया है।"[6] हिन्दुस्तान में गगनान्द, उनके गुरू शून्यानन्द जैसे अनेक धर्मगुरुओं और भगवानों के पीछे विराट पूँजी लगी है और नानाप्रकार के उच्छाटन के सहारे ये लोग बुद्धिजीवियों के सुलाने के प्रयत्न में लगे हुए है। रामराज को हिन्दू धर्म में बुराईयाँ ही बुराईयाँ नज़र आती हैं। उनके अनुसार हिन्दू शास्त्र और धर्म धूर्तता, पाखण्ड और छल की खान है।

'सोनामाटी' के रामरूप की तरह इस उपन्यास का संतोषी पंड़ित अध्यापक है, शिक्षित है, लेकिन थोड़ी बहुत अन्धविश्वासों से वह भी मुक्त नहीं है। रामराज जब रात को रोते हैं तब उसका कहना है कि रात में रोने पर मनुष्य की अतृप्त इच्छाएँ मरने के बाद भी उसके पीछे लगी रहती हैं। मछली का दर्शन पंड़ित शुभ मानते हैं। ग्रामीण जनता को सिद्ध पुरुषों में बहुत अंध श्रद्धा होती है और सिद्ध पुरुष ग्रामीण जनता की इस अन्ध श्रद्धा का फायदा उठाकर उसे अपनो ठगी का शिकार बना लेता है। गांव के लोग ब्राह्मण की गाली को भी आशिर्वाद मानते हैं।

'बीस बरस' में बरन बाबा का पक्का पूजारी था दामोदर । वह हर सोमवार को दूध चढ़ाता है। गांव में बरम बाबा को भय मोचन देवता माना जाता था । बीस वर्ष के बाद गांव आए दामोदर को ऐसा लगता है कि पूरी दुनिया में एक ओर विज्ञान अपनी बौद्धिकता का दावेदार बना हुआ है तो दूसरी ओर धार्मिक उन्माद और अज्ञात सत्ता के प्रति आग्रह बढ़ता जा रहा है। मन है की शान्ति के लिए गांव के अध्यापक जन हनुमान मन्दिर बनवा रहे हैं। देश में मन्दिरों की कोई कमी नहीं है। “यदि मनुष्य मन को साफ कर ले तो मन्दिर मस्जिद के बिना भी इसे शान्ति मिल सकती है और न साफ करे तो मन्दिर मस्जिद उसे और भी अशान्त कर सकता है।"[7] धर्म के संबन्ध में दामोदर कहते हैं कि "धर्म आज बड़े जोर शोर से आपसी कलह का साधन बन रहा है।"[8] गांव के लोगों को चुड़ैल पर विश्वास है । आज बीस वर्ष के बाद भूतों के भय से भरा सुनसान जगह और विषम स्थान मानव जाति के स्पर्श से रौनक में बदल गया है। परीक्षा पास होने के लिए बरम बाबा पर दूध चढ़नेवाले कुमार बाबा के पोते का कहना है कि देश के बड़े बड़े लोग, तंत्रि मंत्री, नेता सब जादू टोना, मंत्र आदि के चक्कर में हैं, फिर क्या वह नहीं कर सकता।

हिन्दी के सुपरिचित उपन्यासकार द्रोणवीर कोहली ने अपने उपन्यास 'तकसीम में विभाजन पूर्व के पश्चिमोत्तर भारत के गांव, कस्बों और शहरों की पृष्ठभूमि को अंकित किया है। उस वक्त थोहा गांव में हिन्दू मुसलमानों के बीच सांप्रदायिक झगड़े विरलें होते थे। उन दिनों इलाके में आर्य समाज की लहर चल रही थी। काशीराम और हकूमत गांव गांव में आर्य, समाज का प्रचार करते थे। वे दोनों वैदिक धर्म चिन्तन को लोगों तक पहुँचाने की कोशिश में थे। बाहर से वे दोनों आर्य समाज के उन्नत आदशों को रटते में रहते हैं लेकिन अन्तर से वह इतना संकुचित मनवाला है कि जब उसके रिश्तेदार मुसलमान बन जाने की खबर से तड़प उड़ता है और उसे फिर से हिन्दू धर्म में लाने की कोशिश भी करते हैं। इस उपन्यास में हैदराबाद आन्दोलन का उल्लेख किया है। हैदराबाद आन्दोलन के वक्त नए मन्दिर बनवाने और पुराने मन्दिरों की मरम्मत मना कर दी गई । निजाम ने मंदिर गिराकर उनके स्थान पर मस्जिद बनाया गया । वास्तव में निज़ाम सारी रियासत को मुस्लिम रियासत में तब्दील करने के मंसूबे बाँध रहा था। जिसमें मुसलमानों के सिवा अन्य धर्मावलंबियों के लिए कोई स्थान नहीं था। इसी वजह से देश की जगह-जगह आन्दोलन होने लगा था।

'तकसीम' में थोहा मार्हम खाँ गांव में प्रचलित अनेक शकुन, अपशकुन, जादूटोने आन्धविश्वासों का चित्रण करके द्रोणवीर कोहली ने गांव का एक यथार्थ रूप और लोगों के अज्ञानता पाठक के सामने रखा है। थोहा गांव में स्त्रियों का विश्वास था कि यदि कोई निःसन्तान स्त्री कोई बच्चा गोद ले तो उसकी गोद भरती है इसलिए धनदई हकूमत के चौथे बेटे धरम को गोद लेते है, और तीन चार वर्ष के बाद वह गर्भवति भी होती है तब लोगों के मन में यह विश्वास ज्यादा से ज्यादा अमिट होता है। सतभिराई ने चार लड़कों को जन्म दिया इसलिए उनकी मृत्यु के संबन्ध में गांव की स्त्रियों का कहना है कि उसकी कोख पर किसी को आँख लगी थी, इसलिए वह जल्दी मर गयी। गणपत घर से निकलते वक्त पीछे मुड़कर नहीं देखता। क्यों कि पीछे मुड़कर देखने से मन का कार्य संपन्न नहीं होता। मुडुंन संस्कार के दिन हर घर में मांस की बोटियों से भरी परात छत पर रखते है। लोगों का विश्वास था कि यदि कोई चील परात में से मांस उठाकर ले जाती है तो समारोह मंगलमय माना जाएगा। लेकिन चील ऐसा पक्षी है कि मीलों ऊपर उड़ते वक्त भी नीचे मांस देखकर उत्तर आता है। लेकिन यह सब जानते हुए भी गांववाले इस रिवाज़ को छोड़नेके लिए तैयार नहीं है। इसीप्रकार के अन्धविश्वास हमारे समाज की जड़ों को खोखला बना देते है ,विधवा को अपशकुन माना जाता है। इसलिए रास्ते में कहीं विधवा को देखने पर लोग यात्रा स्थगित कर देते हैं। बहुत से गांवों में चेचक, हैजा, प्लेग आदि बिमारियों का कारण देवी का प्रकोप माना जाता है। इन बीमारियों को दूर करने केलिए बहुत से अंधविश्वासी ग्रामीण रोगी का उपचार न करके देवी की पूजा करते हैं। जब धनधई की बेटी को चेचक पड़ा तब गांव की बड़ी बूढ़ी औरतों का कहना है कि जातकी को तो माता निकल आई है। चेचक आने पर घर की रीतियों में सख्त नियंत्रण होता है। घर में कपड़ों की धुलाई बंद करते हैं, साबून इस्तेमाल नहीं करते, प्याज, मीट- अंडा, मछली नहीं खाते और घर के मदों को दाढ़ी बनाना भी वर्जित था। जब धनदई के दूसरे बेटे को टी.बी हुआ तब रामरक्खो उसे कोसता है कि उसने पुरखों के रस्मों रिवाज़ की अवहेलना करने का दुस्साहस किया था।

'डूब' उपन्यास में मुख्यतः तीन धर्म के लोग आते हैं, वे हैं हिन्दू, इस्लाम और जैन धर्म धर्म के नाम पर होनेवाले अत्याचारों, आडम्बरों और अनीतियों का भी चित्रण इस उपन्यास में भी हुआ है। बड़े साब के बड़े लड़के ने गांव के सब लोगों को बहका दिया कि मुसलमानों के रहते आज़ादी का कोई अर्थ नहीं है। उसके बाद हुए सांप्रदायिक दंगे में मारे मुसलमानों के शव दूर जंगल में गड्ढे खोदकर गाड़ दिए गए और उनपर बड़े बड़े पत्थर रख दिए गए, जो आज 'मुसल्मानी पथरा' के नाम से जाने जाते हैं। एक दिन अचानक गांव के लोग एक पत्थर को पूजने लगे, किसी को पता नहीं उसके संबन्ध में । उसका नाम भी दिया पथरा बब्बा पथरा बब्बा की पूजा करने के कारण मोती साव को बिरादरी से बाहर कर दिया गया। लड़या गांव का और एक देवता है देहरे बब्बा। वे गांव के रक्षक देवता मानते थे। 'डूब' में लड़या गांववालों का विश्वास है कि मरने के बाद हर व्यक्ति भूत बनकर आता है। यदि पूरी संतुष्टि के साथ मरे तो वह भूत नहीं बनेगा। अगर फसल में कोई कमी आने पर गांव के सब लोग जाते हैं बामन महाराज के यहाँ, अपना भाग्य कोसता हुआ वे लोग अपने ग्रहदशा सुधरवाते हैं। पहले पहले बरसात को देवी मैया का वर समझता था, यह वर गांववालों को इतना ज्यादा मिला कि बिना, बादल बरसात से बाढ़ आ गया। गांववाले अपने रोक शोक दूर करने केलिए कुम्हार बच्चा पर सवारी गाँठते हैं ।

'पार' में मूसरखेरे के लोग गौंड़ बब्बा पर विश्वास करते हैं। खेरे के किसी ने देवता को पत्थर समझकर तोड़ दिया और उस पर हग मूत दिया था इसलिए खेरे का डर है कि उनपर गौड़ बब्बा का कोप होगा। हल्के साव बानियों के मंदिर से भगवानजी को उठाकर राजघाट ले जाते हैं। कैलाश भी जिठौत में मन्दिर बनाकर लड़ई के मन्दिर की प्रतिमाएँ ले जाने की तैयारी में है। तब लोगों का डर है कि जब देवता चले जाएंगे तो अकाल पड़ेगा, सूखा पड़ेगा लोग बेमौत मरेंगे। पंडित महाराज भगवान की पूजा करते हैं इसलिए उनके पुत्र कुपुत्र होने पर भी गांववालों का उसपर विश्वास है । यह विश्वास उन्हें संस्कारों से मिला है। भक्त मन्दिर में भगवान से प्रार्थना करके अपने पापों से मुक्ति के लिए आता है और पूजारी ही भगवान की सेवा करते हैं। पूजारी जितना भी नीच हो फिर भी भगवान की सेवक होने के कारण गांववालों को उन पर विश्वास हैं। यह गांववालों का संस्कार हैं। यह संस्कार गांववालों को सदियों से हस्तान्तरित करके मिला है। माते को प्रसाद में बामन महाराज कांच का टुकड़ा डालकर देता है, भगवान का प्रसाद थूक नहीं सकते इसलिए दस वर्ष तक वह कांच का टुकड़ा माते के तालू पर रहता है। आठ साल तक माते का बोलना बन्द भी हो जाता है। धर्म के प्रति गांववालों में इतना आसक्ति है । जब फुलिया के तीन चार बच्चे जन्म होते ही मर जाते हैं तब वह प्रसूति के बाद सब किसम के कन्द, मूल, जड़-पीपल, उबलकर, पीसकर, धोलकर पीती है, क्यों कि उनका विश्वास हैं कि देह में विषैले रक्त होने के कारण ही ऐसा होता है । इसलिए वह देह से विषैला लहू जाने के लिए यह औषधी पीती है। लेकिन यह स्वास्थ्य के लिए बड़ी हानिकारक है। यह अन्त नहीं' में बिहार में प्रचलित अन्धविश्वासों का उल्लेख मिथिलेश्वर ने किया है । चुनिया बचपन से ही सुनती आ रही है ज़मीन पर गिरे दूध को छाँगना अच्छा नहीं होता। लेखक जोखन के ज़रिए इन अंधविश्वासों को भ्रामक फिज़ुल और आधार हीन बातें मानते हैं ।

इन आंचलिक उपन्यासों में चित्रित धार्मिक और अन्धविश्वासों से यह बात स्पष्ट होती है कि भारतीय ग्रामीण समाज के समसामयिक धार्मिक जगत में परिवर्तन स्थान ग्रहण कर रहा है। धर्म संबन्धी पुरानी मान्यताएँ उन्मूलित हो रही हैं तथा नवीन धारणाएँ एवं मान्यताएँ उनका स्थान ग्रहण कर रही हैं। गांव में अन्धविश्वासों को जीवित रखना बैगा, गुनिया, ओझा, तान्त्रिक लोगों के निहित स्वार्थ के लिए आवश्यक है। ईश्वर पर गांववालों का अटूट विश्वास होता है। ये लोग इस विश्वास का स्वार्थ लाभ उठाते हैं। ग्रामीण जीवन अस्वस्थ रूढ़ियों और विगलित मान्यताओं की जखड़ से ग्रसित है। गांव में अंधविश्वासों का मूल कारण अज्ञान और अशिक्षा है। ग्रामीण अंधविश्वासों को धार्मिक मान्यता मानकर कभी त्याग नहीं करते। युग आज तेज़ी से करवट -बदल रहा है लेकिन गांवों से आज भी अन्धविश्वास दूर नहीं हुआ है

निष्कर्ष :

हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में धार्मिक चेतना और अंधविश्वास के बीच का संघर्ष केवल साहित्यिक विषय नहीं, बल्कि समाज की गहरी सच्चाइयों का प्रतिनिधित्व करता है। इन उपन्यासों ने हमें यह समझने का अवसर प्रदान किया है कि कैसे धार्मिक विश्वास, जो एक ओर समाज के नैतिक आधार का निर्माण करते हैं, वहीं दूसरी ओर अंधविश्वास के रूप में समाज के विकास में बाधा भी डालते हैं। उपन्यासकारों ने इन दोनों पक्षों को प्रभावी ढंग से चित्रित किया है, ताकि पाठक न केवल धार्मिक संवेदनाओं से जुड़ सकें, बल्कि वे अंधविश्वास और उसके दुष्परिणामों के प्रति सचेत भी हो सकें। यह साहित्यिक यात्रा हमें यह संदेश देती है कि समाज में बदलाव केवल तभी संभव है जब हम धार्मिक विश्वास और तर्कशीलता के बीच एक संतुलन बना सकें, ताकि न तो अंधविश्वास की कड़ी पकड़ हो और न ही धार्मिकता के नाम पर समाज में अन्याय और अंधकार फैलने पाए।

संदर्भ :

1. नरेन्द्रमोहन धर्म और सांप्रदायिकता पृ. सः 17
2. ज्ञानचन्द्रगुप्त स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना पृ. सं 203
3. कृष्णासोबतो ज़िन्दगीनामा पृ. सं 34
4. मैत्रेयी पुष्पा इदन्नमम पृ. सं 273
5. मैत्रेयी पुष्पा चाक पृ. सं 147
6. विवेकोराय समरशेष है पृ. सं 225
7. रामदरश मिश्र बीस बरस पृ. सं 124
8. रामदरश मिश्र बोस बरस पृ. सं 125